# देवता हेतु आसनाद्युपचारनिवेदनफल

आवाहनं तु यो दद्यात्स च क्रतुफलं लभेत्।
आसनं रुचिरं दत्त्वा शतक्रतुत्वमाप्नुयात् ॥
पानि पातकं हन्यादयेणाप्नोत्यनर्घताम्।
ततश्चाचमनं दत्त्वा सुचित्तः सुखितां व्रजेत् ॥
स्नानं व्याधिभयं हन्याद्वस्त्रेणायुष्यवर्द्धनम्।
उपवीतं तु यो दद्याद्ब्रह्मवेत्तृत्वमेव च।
भूषणानि च यो दद्यादनापद्यमवाप्नुयात्।
गन्धेन लभते काममक्षत रक्षतं भवेत् ॥
नानापुष्पप्रदानेन स्वर्गे राज्यमवाप्नुयात्।
धूपो दहति पापानि दीपो मृत्युविनाशनः ॥
सर्वमानस्तु नैवेद्यं दत्त्वा तृप्तिरतो भवेत्।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

मुखवासनदानेन कीर्तिमान्भवति ध्रुवम् ॥
नीराजनेन शुद्धात्मा दर्पणेन प्रकाशयेत्।
फलदः पुत्रवान्मर्त्यस्ताम्बूलात्स्वर्गमाप्नुयात् ॥
प्रदक्षिणां तु यः कुर्यात्पापं हन्ति पदेपदे।
दण्डप्रणाम यः कुर्याद्देवमुद्दिश्य सविधौ ॥
वर्षाणि वसते स्वर्गे देहान्ते रेणुसंख्यया ॥
स्तोत्रेण दिव्यदेहोऽपि वाग्मी भवति तत्क्षणात्।
पुराणपठनेनैव सर्वपापक्षयो भवेत् ॥
(शैवरत्नाकर)



**देवताओं हेतु आसनादि उपचारों का फल-शैवरत्नाकर में इस प्रकार कहा गया है-**

**जो आवाहन देता है, उसे यज्ञ करने का फल प्राप्तहोता है।**

जो देवता को आसन का उपचार देता है, उसे सौ यज्ञों के बराबर फल मिलता है।

पाद्य प्रदान करने से पातक नष्ट होते हैं। अर्घ्य प्रदान करने से उन्नति होती है।

आचमन देने से चित्त में प्रसन्नता होती है।

देवता को कराया हुआ स्नानोपचार व्याधि के भय को नष्ट करता है।

जो उपवीत प्रदान करता है, वह ब्रह्मवेत्ता हो जाता है।

जो देवता को आभूषण दान देता है, वह आपत्तिरहित हो जाता है।

गन्धोपचार से देवपूजन करने पर मनोकामनायें  पूर्ण होती हैं।

अक्षत प्रदान करने से अक्षतप्रदाता की रक्षा होती है।

नाना प्रकार के पुष्प प्रदान करने से स्वर्ग का राज्य मिलता है।

धूपदान करने से पाप भस्म हो जाते हैं।

दीपदान मृत्यु का विनाशक होता है।

नैवेद्य प्रदान करने से सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है एवं तृप्ति होती है।

इलायची आदि देने से कीर्ति प्राप्त होती है।

नीराजन देने से आत्मा शुद्ध तथा निर्मल होकर दर्पण की भाँति प्रकाशित होती है अर्थात् पूजक को आत्मसाक्षात्कार होता है।

फल देने वाला पुत्रवान होता है।

ताम्बूल देने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

पदे-पदे प्रदक्षिणा से पाप नष्ट होते हैं।

जो देवता को उसके समीप जाकर दण्ड प्रणाम करता है, वह शरीरावसान होने के पश्चात् उतने ही वर्षों तक स्वर्ग में निवास करता है, जितने धूलिकण दण्ड

प्रणाम के समय उसके शरीर में चिपक जाते हैं।

देवता की स्तुति करने से तत्क्षण वाग्मी तथा दिव्यदेह हो जाता है।

देवता के सान्निध्य में पुराण का पाठ करने से सभी पाप क्षीण हो जाते हैं।